अल्लाह ही दाता है

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत उमर बिन अल खत्ताब रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि अगर तुम अल्लाह पर इस तरह भरोसा करो जिस तरह भरोसा करने का हक़ है तो वह तुम्हें ऐसे ही रोज़ी देगा जिस तरह वह पक्षियों को रोज़ी देता है जो सुबह के वक़्त खाली पेट निकलते हैं और शाम के वक़्त पेट भर कर वापस आते हैं। (तिर्मिज़ी ४/५७३-२३४४, इब्ने माजा २/१३६४-४१६४, मुसनद अहमद १/२०५, ३३२)

रोज़ी का मामला बहुत अहम है। इन्सान अपनी पूरी ज़िन्दगी को इसी बिन्दु पर खतम कर देता है कि वह कहां से और कैसे रोज़ी हासिल करे? इसके लिये जितने तरीके और साधन होते हैं सब अपनाता है। एक मोमिन बन्दे का अक़ीदा यह होना चाहिए कि अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है, उससे जितना मांगा जाए कम है और वह चाहे जितना दे उसके खज़ाने में राई के दाने के बराबर भी कमी नहीं हो सकती और रोज़ी जिसके सिलसिले में इन्सान इतना परेशान रहता है अपनी तमाम सृष्टि को रोज़ी पहुंचाने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले रखी है इसी लिये आप देखते हैं हर इन्सान बल्कि हर सृष्टि अल्लाह की दी हुई नेमतों से लाभान्वित हो रही है और उसे अल्लाह की तरफ से रोज़ी मिल रही है और रोज़ी देने के बारे में कोई भेद भाव नहीं है। मुस्लिम, गैर मुस्लिम, अच्छा बुरा, जानवर हो या इंसान, हर एक को रोज़ी मिल रही है और वहां से मिल रही है जहां से वह सोच भी नहीं सकता। लेकिन जब इन्सान का ईमान कमज़ोर हो अल्लाह पर भरोसा न हो तो वह बहुत सारी चीज़ों से वंचित (महरूम) हो जाता है और दर-दर की ठोकरें खाता है और अगर यही भरोसा और विश्वास अल्लाह पर इस तरह हो जिस तरह उस का हक़ है तो वह ऐसे ही रोज़ी देगा जैसे खाली पेट बेहाल पक्षियों को देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''ज़मीन पर चलने फिरने वाले जितने जानदार हैं सब की रोज़ियां अल्लाह तआला पर है यानी वह जिम्मेदार है'' (सूरे हूद-६) ज़मीन पर चलने वाली हर सृष्टि इनसान हो या जिन्नात, चौपाए हों या पक्षी, छोटी हो या बड़ी, समुद्र में हो या खुश्की (थल) पर हर एक को उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ खूराक देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है : ''आसमान में तुम्हारी रोज़ी है और वह भी जिस का तुम से वादा किया जाता है'' (सूरे ज़ारियात-आयत नंबर २२)

जिस रोज़ी रोज़गार के बारे में इतनी स्पष्ट तालीमात हैं और वह भी वादा की शक्ल में तो ऐसी सूरत में हमारे ईमान में और ज़्यादा बढ़ोतरी होनी चाहिए और अल्लाह पर भरोसा और विश्वास होना चाहिए और रोज़ी के जो हलाल संसाधन हैं जिस की तरफ इस्लाम ने हमारा मार्गदर्शन किया है उनको अपनाएं और इन संसाधनों को अपना कर खूब मेहनत करनी चाहिए। अल्लाह से दुआ है कि वह हम लोगों को हलाल रोज़ी कमाने की क्षमता दे, ईमान और विश्वास पर बाक़ी रखे और जब हमारा ख़ातमा हो तो इस आस्था के साथ हो कि अल्लाह ही दाता (देने वाला) है।

मासिक

इसलाहे समाज

अक्टूबर 2019 वर्ष 30 अंक 10

सफ़रूल मुज़फ्फर 1441 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् हक़्क़

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये
- टोटल पेज 28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	अल्लाह ही दाता है	2
2.	वर्तमान परिस्थिति और हमारी ज़िम्मेदारियां	4
3.	सबको मआफ कर दिया	8
4.	शिक्षा की तरफ	9
5.	नमाज़ियों की क़िस्में	10
6.	क़र्ज़दार को मोहलत देने का सवाब	13
7.	आसाम सैलाब प्रभावितों में तीसरे दिन भी राहत व रिलीफ़ का काम जारी	16
8.	प्रेस रिलीज़	17
9.	दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करें	19
10.	पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश	20
11.	प्रेस रिलीज़	22
12.	पवित्र कुरआन की तिलावत का फायदा	24
13.	जानवरों को भी दया का हक़ है	25
14.	सऊदी के तेल पलांट पर हमला निन्दनीय	27
15.	कलैन्डर 2020	28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

वर्तमान परिस्थिति और हमारी ज़िम्मेदारियां

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

इन्सान की हैसियत से विशेष रूप से मुसलमान होने के एतबार से और समय की मांग के अनुसार हम पर जिम्मेदारी बहुत बढ़ी हुई है। हालात और वाक़आत वैसे ही घटित होते हैं जैसे हम अपनी जिम्मेदारियों से निपटते हैं और निभाने का प्रयास करते हैं क्यों कि यह प्राकृति का कानून है कि कर्म से ही ज़िन्दगी बनती है बेअमल और बेकिरदार इंसान वास्तव में मात्र लाश है। हमको सोचना चाहिए कि इन महत्वपूर्ण मसाइल को हल करने के लिये उसके पास क्या कार्यक्रम है और वह किस दिशा में जा रहा है।

वास्तव में आखिरत की कामयाबी, इज़्ज़त और बुलन्दी का रिश्ता पूरी तरह दुनिया से जुड़ा हुआ है, इसलिये दुनिया में अपनी हरकत व अमल के ज़रिए ज़िन्दगी का सुबूत देना होगा और अपने आस पास खानदान, समाज, देश, समुदाय और मानवता के लिये अपनी विभिन्न जिम्मेदारियां निभानी होंगी और इस दुनिया में अच्छे आचरण, सत्कर्म और अल्लाह की सृष्टि की सेवा करके आख़िरत को कामयाब बनाना होगा। और यही वह हक़ीक़त है जिसको कुरआन में यूं बयान किया गया है। अल्लाह तआला ने फरमाया ''जिसने मौत और ज़िन्दगी को इसलिये पैदा किया कि तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन अच्छे काम करता है और वह गालिब (प्रभुत्वशाली) और बख़्शने वाला है'' (सूरे मुल्क-२)

प्रसिद्ध कथन है कि दुनिया आख़िरत की खेती है यह संसार तो फराइज़ और ज़िम्मेदारी की अदायगी और राष्ट्र एवं समुदाय के लिये बहुत कुछ कर जाने के लिये है इस सांसारिक जीवन में भूखों को खाना खिलाना, प्यासों को पानी पिलाना और बीमारों का हाल चाल मालूम करने या साँत्वना देना अगर्चे मामूली सी बात लगती है लेकिन चूंकि इस का तअल्लुक अल्लाह के बन्दों को राहत पहुंचाने, सेवा और उनके तईं अपने दायित्व को महसूस करने से है इसलिये इसकी अहमियत इतनी बढ़ जाती है कि यह अल्लाह की समीप्ता और खुशी की प्राप्ति का माध यम बन जाता है। एक हदीस में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन अल्लाह तआला फरमाएगा ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार हुआ तो तूने मेरी इयादत नहीं की, बन्दा कहेगा कि ऐ अल्लाह मैं तेरी इयादत (हाल चाल) कैसे मालूम करता तू तो पूरे संसार का पालनहार है, अल्लाह तआला फरमाएगा, क्या तुझे ख़बर नहीं कि अगर तू उसकी इयादत करता तो मुझे उसके पास पाता। ऐ आदम के बेटे! मैंने तुझ से खाना मांगा लेकिन तुमने मुझे खाना नहीं खिलाया बन्दा कहेगा कि ऐ मेरे अल्लाह मैं तुझे कैसे खाना खिला सकता हूं तू तो पूरे संसार का पालनहार है। अल्लाह तआला फरमाएगा तुझे पता नहीं कि तुझ से मेरे अमुक (फलाँ) बन्दे ने खाना मांगा तो तूने उसे नहीं खिलाया, क्या तुझे मालूम नहीं कि अगर तू उसे खाना खिलाता तो मुझे उसके पास पाता। ऐ आदम के बेटे! मैंने तुझ से पानी मांगा तो तूने मुझे नहीं पिलाया, बन्दा कहेगा ऐ मेरे मौला (मददगार) मैं तुझे कैसे पानी पिलाता तू तो पूरे संसार का पालनहार है। अल्लाह तआला फरमाएगा तुझ से मेरे फलां

बन्दे ने पानी मांगा तो तूने उसे नहीं पिलाया अगर तू उसे पिलाता तो मुझे उसके पास पाता'' (सहीह मुस्लिम)

इन्सान की दुनियावी ज़िन्दगी खाने, पीने, रहने सहने, और बीमारी व तन्दुरूस्ती से कहीं ज़्यादा इन्सानी ज़रूरतों में सबसे अहमतरीन ज़रूरत आखिरत है। दुनियावी गेज़ाओं और दवाओं की कोई हैसियत और गिनती इस अर्थ में नहीं है कि यह ज़रूरतें अस्थाई वक़्ती और सीमित हैं इसमें किसी नेक और बुरे का कोई अन्तर नहीं है असल स्टेज (मरहला) आखिरत का है बल्कि अल्लाह दुनिया में सबका पालन पोषण करने वाला, मददगार है।

लेकिन आखिरत (मरने के बाद के जीवन) का मामला बिल्कुल अलग है वहां की गिज़ाओं और वहां के लिये ज़ादेराह (कर्म) अलग है और वहां की बीमारी नासूर और लंबी है जिससे मुक्ति पाने का वहां कोई माध यम नहीं होगा। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जिस दिन माल और औलाद कुछ काम न आएं गी लेकिन फायदा वाला वही हो गा जो अल्लाह तआला के सामने बे ऐब दिल लेकर आएगा'' (सूरे शोअ्रा-८८-८९)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''पस उन्हें सिफारिश करने वालों की सिफारिश नफा न देगी'' (सूरे मुद्दस्सिर-४८)

फरमाया ''और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा (हालांकि) एक दूसरे को दिखा दिए जाएंगे। पापी उस दिन के अज़ाब के बदले फिदया में अपने बेटे को, अपनी बीवी को और अपने भाई को और अपने कुंबे को जो उसे पनाह देता था और धरती के सब लोगों को देना चाहे गा ताकि यह उन्हें निजात दिला दें मगर यह हार्गिज़ न होगा। यक़ीनन वह शोला वाली आग है जो मुंह और सर की खाल खींचने वाली है वह हर उस शख़्स को पुकारे गी जो पीछे हटता और मुंह मोड़ता है और जमा करके संभाल रखता है।'' (सूरे मआरिज-१०)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः उस दिन आदमी अपने भाई से और अपनी मां से और अपने बाप से और अपनी बीवी और अपनी औलाद से भागे गा। उनमें से हर एक को उस दिन ऐसी चिंता दामनगीर होगी जो उसके लिये काफी हो गी। (सूरे अबस-३४-३७)

कुरआन में अल्लाह ने फरमाया ''पस जबकि सूर फूंक दिया जाएगा उस दिन न तो आपस के रिश्ते ही रहेंगे न आपस की पूछ गुछ, जिनकी तराजू का पल्ला भारी हो गा वह निजात वाले होंगे और जिनके तराजू का पल्ला हलका हो गया यह हैं वह जिन्होंने अपना नुकसान आप कर लिया जो हमेशा के लिये जहन्नम वासिल हुए''। (सूरे मोमिनून-१०२-१०३)

आज हालात की संगीनी और उसकी दुर्दशा का यह हाल है कि अल्लाह की खुशी की ख़ातिर न कोई दुनिया और आख़िरत की आवश्यकताओं की तरफ ध्यान देने वाला है और न कोई उनकी दवा और एलाज करने के लिये तैयार व चिंतित है। खानदान, समाज, देश समुदाय और इन्सानियत के तईं अपनी जिम्मेदारियां निभाना दूर की बात है जिनसे अल्लाह की खुश्नूदी हासिल हो और आखिरत की मंजिल (मरने के बाद का जीवन) आसान हो जाए क्योंकि इन्सान के जीवन का सबसे पहला मक़सद और इस्लामी जिन्दगी का केन्द्र बिन्दु और मक़सद सिर्फ और सिर्फ यही है कि आख़िरत की सफलता हर हाल में हासिल हो अगर यह न रहा तो दुनिया व आख़िरत में घाटा के समान होगा।

एक मोमिन बन्दे के लिये आखिरत की कामयाबी असल मकसद है वहीं इसके लिये दुनिया की कामयाबी भी अपेक्षित है इसलिये इसको यह दुआ सिखाई गई है ''ऐ हमारे रब हमें दुनिया में नेकी दे

और आख़िरत में भी भलाई फरमा और हमें जहन्नम के अज़ाब से निजात दे''। (सूरे बक़रा-२०१)

चूंकि हर जमाने की मांग, आवश्यकताएं और मसाइल अलग अलग होते हैं इसलिये उनकी जिम्मेदारियां भी विभिन्न होती हैं और इन जिम्मेदारियों को निभाने के लिये हिकमत, कार्यविधि और संसाधन भी अलग होते हैं इसलिये इन मसाइल, जिम्मेदारियों और संसाधान का एहसास और ज्ञान अति आवश्यक है।

दूसरी बात यह है कि हर शख्स अपनी जिम्मेदाररियों के बारे में जवाबदेह है। दूसरा क्या कर रहा है। और किस हद तक अपनी ज़िम्मेदारी निभा रहा है यह सोचने के बजाए अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने की चिंता करनी चाहिए। आज की एक बड़ी समस्या यह भी है कि हर शख्स अपनी ज़िम्मेदारी दूसरों के सर मंढ़ने के चक्कर में लगा हुआ है कि उसको ऐसा करना चाहिए, लोग ऐसा क्यों नहीं कर रहे हैं, मुझे क्या करना चाहिए इसकी चिंता नहीं होती जिस की वजह से दिनों दिन समस्याओं के अंबार लगते जा रहे हैं और कठिनाइयों और परेशानियों में बढ़ोतरी होती चली जा रही है क्योंकि इसकी वजह हमारा गैर ज़िम्मेदाराना रवैया है बल्कि यह सब हमारे हाथों की कमाई और परिणाम है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''खुश्की और तरी (थल और जल) में लोगों की बदआमालियों के कारण फसाद फैल गया है इसलिये कि उन्हें उनके बाज़ करतूतों का फल अल्लाह तआला चखा दे, बहुत मुमकिन है कि वह बाज़ आ जाएं। (सूरे रूम-४१)

हालात चाहे कैसे भी हों लेकिन एक हक़ीक़त सर्वमान्य है कि राष्ट्र, समुदाय और मानवता की सेवा और अल्लाह के बन्दों तक उसके पालनहार के सन्देश को पहुंचाना ऐसी ज़िम्मेदारी है जो हर ज़माने में संयुक्त रही है और रहेगी इस लिये अगर मौजूदा हालात में कामयाब होना है तो इन दोनों मैदानों में हिकमत एवं बुद्धिमत्ता और स्थिरता के साथ काम जारी रखना होगा। मक्का के असहाय हालात में मानवता के उपकारक मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके प्यारे साथियों ने इसी शैली पर काम किया था और भय व डर के वातावरण को अम्न व शान्ति से बदल डाला था। अगर वह हालात का रोना रो कर घर का दरवाज़ा बन्द करके बैठ जाते तो फिर कभी दुनिया वालों के लिये दया आगार और उत्तम समुदाय न कहे जाते और नैतिकता और मानवता का मौसमे बहार नहीं आता और भय व आतंक की क्षांव में जीने वाली दुनिया को अम्न व सौभाग्य नसीब नहीं होता।

लेकिन खेद है कि हम ने इन उज्जवल चिन्हों को भुला दिया जबकि दूसरी क़ौमों ने आप और आप के प्यारे साथियों के पदचिन्हों की पैरवी में ज़िन्दगी का राज़ और मक़सद को पा लिया। सच कहा है।

ज़माना बड़े गौर से सुन रहा था, हम ही सो गए दास्तां कहते कहते

इन्सान और मुसलमान होने की हैसियत से हमारी ज़िम्मेदारी है कि घर और व्यक्ति से लेकर पूरी दुनिया तक अल्लाह के पैगाम को पहुंचाने का कर्तव्य निभाएं इसी में उम्मत (गरोह) की कामयाबी और सौभाग्य है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिये पैदा की गई है कि तुम नेक बातों का हुक्म देते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो'' (सूरे आले इमरान-११०) इस आयत में इसी कर्तव्य को याद दिलाया गया है जिसे हमारे पूर्वजों सहाबा किराम रज़िअल्लाहो अन्हुम ने अदा किया था दुनिया के हर हर व्यक्ति का मार्गदर्शन करना और दुनिया व परलोक में कामयाबी की जिम्मेदारी

हमारे सर है। जहाँ तक कि हम अपने असल इस्लामी दायित्वों में सफल हो जाएं।

लेकिन इससे बड़ा और महत्वपूर्ण दायित्व यह है कि हम अपने अन्दर ईमान और विश्वास का चिराग रोशन करें और अपने रवैये के अन्दर स्थिरता पैदा करें और ईमानी बसीरत की रोशनी में मेयारी और जिम्मेदार शहरी बनकर दिखाएं यह ऐसा काम और अमल है जो वक़्त की बड़ी से बड़ी मजबूत जंजीरों को तोड़ सकता है क्योंकि ऐसे लोगों को अल्लाह की मदद और फरिश्तों का समर्थन प्राप्त होता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''वाकई जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर इसी पर काइम रहे उनके पास फरिश्ते यह कहते हुए आते हैं कि तुम कुछ भी अन्देशा और गम न करो उस जन्नत की खुश्खबरी सुन लो जिसका तुम वादा किए गए हो'' (सूरे हामीम सजदा-३०)

मार्ग दर्शक और ज़िम्मेदारान अवाम के अधिकारों के सिलसिले में अल्लाह से डरें, उनका हक़ अदा करें और अल्लाह और लोगों के यहां जवाबदेही का ख्याल रखें।

इसी तरह अवाम अपने मार्गदर्शकों और प्रतिष्ठित लोगों पर भरोसा करें और भरोसा बहाल रखें और इस सिलसिले में मामूली शक व सन्देह को न आने दें, आप उनके प्रति अपनी ज़िम्मेदारी निभाएं और उनसे अपने प्रति भलाई की आशा रखें। हमारी मुस्लिम कौम इस हवाले से बड़ी ला परवाह और गैर ज़िम्मेदार साबित हुई है। वह बग़ैर समझे और बिना तहकीक अपने मार्गदर्शकों और बड़ों के अच्छे कामों को भी ऐबजूई की नज़र से देखते हैं लेकिन उनके प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों से गफलत का उन्हें मामूली एहसास एवं चेतना तक नहीं होती कि उनकी अक़्ल व दिमाग से कौन खेलवाड़ कर रहा है। यह शिकायत आम है कि मुसलमानों में लीडरशिप नहीं है और क़ौम बेलगाम और दिशाहीन का शिकार है लेकिन लीडर शिप बढ़ने और पनपने देने के सिलसिले में हमने क्या ज़िम्मेदारी निभाई इस पर कभी गौर करने का मरहला ही नहीं आता जो कि चिन्ता का क्षण है।

हमारी विशेष तौर पर मुसलमानों की यह जिम्मेदारी है कि अल्लाह की तरफ लौटें और अपने स्वामी व मेहरबान रब के दर्मियान मामलात दुरूस्त करें, उसको ज़्यादा से ज़्यादा याद करें, उसके बन्दों के अधिकारों को अदा करें, भाई चारा और अम्न व शान्ति का झण्डावाहक बनें, हिंसा और आतंकवाद से मुकम्मल बचें, मायूसी को पास फटकने न दें, सब्र व नमाज़ और सदक़ा खैरात से अल्लाह की मदद करें, कमज़ोरों, गरीबों, मजलूमों, गैरों और अपनों पर मेहरबानी करें ताकि रब की मेहरबानी के पात्र बनें, ईमानी व दीनी ग़ैरत से सुसज्जित हों वहीं उत्तेजना और गुस्से से बफरने से मुकम्मल परहेज़ करें, जुल्म करने और सहने से बचें, शासकों और अवाम की खैर खुवाही और शुभचिंतन का पूर्ण रूप से हक़ अदा करें, अपनी सफों में एकता पैदा करें, हिक्मत, बुद्धिमत्ता और भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने का काम मुहम्मद स० और सहाबा किराम के तरीके के अनुसार करें। फितना फसाद, और झगड़ों से दूर रहें प्रोपैगण्डा करने वाले फासिक़ का नहीं मोमिन की भूमिका निभाएं और हर बुरे कामों से पूरे तौर पर परहेज़ करें और ''अल्लाह के बन्दों भाई भाई बन जाओ'' का व्यवहारिक व्याख्या इस तरह बन जाएं कि अल्लाह की धरती पर केवल उसकी खुशी और सृष्टि की बेहतरी और अच्छाई का काम हो।

❑ ❑ ❑

सबको मआफ कर दिया

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''लोगों! हमने तुम्हें मर्द और औरत से पैदा किया, तुम्हारे क़बीले और ख़ानदान बनाए ताकि तुम एक दूसरे से पहचान लिए जाओ, खुदा के नज़दीक ज़्यादा इज़्ज़त का मुस्तहिक़ (पात्र) वह है जो ज़्यादा परहेज़गार है, ख़ुदा दाना (जानने वाला) और बाक़िफकार (खबर रखने) वाला है''। (सूरे हुजुरात-१३)

देखिए ''अन्नासो मिन आदमिन व आदमो मिन तुराब'' इन्सानी समता के पाठ के लिये कुल सात शब्द हैं लेकिन इनमें वह सब कुछ आ गया जो मुसावात (समता) के अध्याय में कहा जा सकता है और समता (मुसावात व बराबरी) की बुनियादी दलील भी पेश कर दी जिससे इख्तेलाफ की जुरअत किसी को नहीं हो सकती यानी जब तमाम इन्सान हज़रत आदम की औलाद हैं तो वह काले हों या गोरे या पीले, पूर्व के हों या पश्चिम के किसी कौम के हों, किसी देश के हों, किसी ख़ित्ते के हों, सब भाई भाई हैं। भाइयों में उसूली तौर पर ऊंच नीच का मतलब क्या? इन्सान की महानता की निर्भरता न रंग पर है, न नस्ल व खानदान पर, न दौलत पर इसकी निर्भरता केवल संयम और अच्छे व्यवहार पर है। इन्सानों के लिये प्रतियोगिता (एक दूसरे से आगे बढ़ने का) मैदान सिर्फ तक़वा और संयम है। हर मामले में आगे बढ़ने की सोच से झगड़ा और हसद जलन पैदा होने का कारण बन सकता है लेकिन तक़वा संयम, नेकी के काम में ऐसी कोई चीज़ आ ही नहीं सकती इस लिये कि वह तक़वा के खिलाफ होगी।

फिर आप (हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुरैश को संबोधित करते हुए पूछा तुम्हारा क्या ख्याल है कि आज मैं तुम से कैसा व्यवहार करने वाला हूं? सबने कहा आप करीम (सज्जन) और अच्छे हैं करीम की औलाद हैं। आपसे केवल खैर और भलाई की उम्मीद है फरमायाः मैं आज वही कहता हूं जो यूसुफ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों से कहा था आज मेरी तरफ से तुम पर कोई डांट डपट नहीं है जाओ आज तुम सब आज़ाद हो।

संसार के इतिहास के पन्नों को खेंगाल डालिए, इतने अच्छे व्यवहार की कोई मिसाल नहीं मिलेगी यह अफवे आम (साधारण मआफी) उन लोगों के लिये था जो २१ साल तक हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के पैरोकारों के खिलाफ यातना, दुखों और मुसीबतों के वह तूफान बराबर उत्पन्न करते रहे थे जो उनके बस में थें क्या खूब कहा मौलाना आज़ाद ने रसूल अल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कि ''मज़लूमी में सब्र, मुक़ाबले में संकल्प, मामले में सत्य बोलना और ताक़त व सामर्थ रखने के बाजूद मआफ करना, इंसानियत की तारीख की वह विचित्र खूबियां हैं जो किसी एक जिन्दगी के अन्दर इस तरह कभी जमा नहीं हुईं''

यही आदर्श क़्यामत तक हर इंसान के लिये दुनिया व आखिरत में सफलता व कामयाबी की शाश्वत दस्तावेज़ है। मक्का में इसी मौक़े पर एक वाक़आ पेश आया जो इस आध ाार पर उल्लेखनीय है कि इससे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दया करूणा उजागर होती है। एक शख्स हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बात करने आया। सामने आया तो उस पर कपकपी तारी हो गई। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह हालत देखी तो फरमायाः कुछ परवाह न करो, मैं बादशाह नहीं, कुरैश की एक गरीब औरत का लड़का हूं। जो सूखा गोश्त खाती थी। (बुखारी बहवाला रहमतुल लिलआलमीन भाग १ पृष्ठ ३४. रसूले रहमत से साभार पृष्ठ ४३६-४४०)

शिक्षा की तरफ

नौशाद अहमद

यह दुनिया आज़माइश की जगह है, इस दुनिया में जो भी पैदा हुआ है उसको एक न दिन यहां से जाना है और आखिरत (मरने के बाद वाले जीवन) में अपने कर्मों का हिसाब देना होगा। वहां पर कोइ भी हिसाब किताब देने से नहीं बच पाएगा, दुनिया में बहुत से लोग अपनी कमाई के हिसाब को छिपाने में कामयाब हो जाते हैं लेकिन क्यामत के दिन बड़ा से बड़ा चालाक अपने कर्मों के हिसाब से नहीं बच सकता।

दुनिया में इन्सान के आने का मकसद यह है कि उसकी आजमाइश हो सके कि उसने अपने जीवन को अच्छे मकसद के लिये इस्तेमाल किया या यूं ही अपनी जिन्दगी को गुज़ार दिया।

इन्सान की असल कामयाबी यही है कि वह अपने अच्छे कर्मों के आधार पर मरने के बाद वाले जीवन में कामयाब हो जाए इस लोक से जाने के बाद उसकी हमेशा वाली जिन्दगी में सुख मिले और यह जतन हर इन्सान को करना चाहिए अच्छे कर्मों से गाफिल न रहे, अपना पालनहार को याद करता रहे, इबादत में कोई कसर और कमी न करे, अल्लाह ने जिस मक़सद के लिये उसको इस फना हो जाने वाली दुनिया में भेजा है, इसमें वह पूरी तरह से आखिरत के लिये सफल हो जाए। दुनिया में मेहनत करके माल व दौलत कमान, तालीम हासिल करना, एक इन्सान का प्राकृतिक अधिकार है, इसको भी प्राप्त करने के लिये भी इन्सान को किसी भी तरह की कोताही और गफलत नहीं करनी चाहिए। देश व समाज की तरक्की में हिस्सा लेना और एक अच्छे वातावरण के गठन के लिये हर इन्सान को प्रयास करते रहना चाहिए।

मौजूदा ज़माने में शिक्षा विकास की कसौटी बन गई है, ज्ञान इन्सान को एक सकारात्मक दिशा में ले जाता है, आज हर तरफ हर देश में शिक्षा अभियान की चर्चा है, शिक्षा है तो तरक्क़ी है और अगर शिक्षा नहीं है तो पिछड़ापन मुकददर बन जाएगा।

देश में विभिन्न अवसर पर प्रतियोगिता आयोजित की जाती है, इसमें हमें भरपूर हिस्सा लेना चाहिए, इससे हमारी क्षमता में बढ़ोतरी होगी, देश समाज में शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा, आगे पढ़ने का मौक़ा मिलेगा। हमारे बहुत से नौजवान हैं जिनके पास शिक्षा है योग्यता है लेकिन सहीह डायरेक्शन न मिलने के कारण देश में होने वाली प्रतियोगिताओं में भाग नहीं ले पाते, शिक्षाविदों (तालीम के महिरीन) को चाहिए कि वह इस संबन्ध में लोगों में जागरूकता पैदा करें, जो जानते हैं वह अनजान लोगों को शिक्षा की नई दिशा के बारे में जानकारी दें और उन्हें विभिन्न तरीकों से इस जानिब प्रेरित करें इस तरह दुनिया में भी कामयाबी मिलेगी।

हर चीज की कीमत नहीं होती है, वक़्त की कोई कीमत नहीं है, अपना थोड़ा वक़्त दूसरों के लिये भी लगाएं किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि इससे हमारा वक़्त बर्बाद होगा, ऐसा सोचना स्वार्थ और खुद गर्ज़ी की एलामत है, कोशिश यह होनी चाहिए कि हमारी जात से सब को लाभ मिले।

अनस बिन अब्दुल हमीद कौज़ अनुवादः रजाउर्रहमान खुर्शीद अली

नमाज़ियों की क़िस्में

मेरे भाईयो! और बहनो! आप नमाज़ की हिफाज़त करें, क्योंकि क़ियामत के दिन हम से सबसे पहले नमाज़ के बारे में सवाल होगा, अगर उसमें हम कामयाब निकले तो उसी से हमारे दूसरे आमाल का भी अन्दाज़ा किया जाएगा, लेकिन अगर हमारी नमाज़ ही खोटी है तो अभी समझ लें कि हमारे लिए दुनिया और आख़िरत का ख़सारा है, आप खुद को उस तराज़ू पर रख कर तौलें जो इमाम इब्ने क़य्यम रहमातुल्लाह अलैहि ने पेश की है, उन्होंने फरमाया कि नमाज़ पढ़ने वालों की पांच क़िस्में हैंः

पहली क़िस्मः उन लोगों की है जो अपने नफ्स पर ज़ुल्म करते हैं यानी वज़ू में कमी और नमाज़ के औक़ात और उसके अरकान की आदायगी में कोताही करते हैं।

दूसरी क़िस्मः उन लोगों की है जो वज़ू और नमाज़ के औक़ात व अरकान की पाबन्दी तो करते हैं मगर नमाज़ के अन्दर वसवसों और दूसरे ख्यालात में पड़ जाते हैं और उन्हें दूर नहीं करते।

तीसरी क़िस्मः उन लोगों की है जो नमाज़ के अरकान व वाजिबात की पाबन्दी भी करते हैं और वसवसों को दूर करने में अपने नफ्स पर कन्ट्रोल भी करते हैं ताकि शैतान उनकी नमाज़ का कोई हिस्सा चुरा न ले, यह लोग गोया बयक वक़्त नमाज़ और नफ़्स को कन्ट्रोल करने में मशगूल होते हैं।

चौथी क़िस्मः उन लोगों की है जो नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो उसके तमाम हूकूक़ और अरकान खूब अच्छी तरह अदा करते हैं, उनकी पूरी कोशिश यह होती है कि नमाज़ को मुकम्मल तौर पर अदा करें, जैसा कि उसका हक़ है, और उनके दिल नमाज़ की अज़मत और परवरदिगार की इबादत में डूबे हुए होते हैं।

पांचवीं क़िस्मः उन लोगों की है जो नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो चौथी क़िस्म के लोगों की तरह मगर उसके साथ ही उनके दिल अल्लाह रब्बुल आलमीन के सामने होते हैं, और वह अपने दिल से अल्लाह को देख रहे होते हैं। उनके सीने अल्लाह की मुहब्बत व अज़मत से भरे होते हैं। हर तरह के खतरे और वसवसे खत्म हो जाते हैं और उनके और अल्लाह के दरमियान से पर्दा उठ जाता है, वह नमाज़ के अन्दर अपने रब से सरगोशी करने में मशगूल होते हैं और अपनी आंखों को ठण्डक पहुंचा रहे होते हैं। ऐसे नमाज़ियों का दर्जा दूसरों की निस्बत आसमान व ज़मीन के बीच जो कुछ है, उससे भी बड़ा है।

पहली क़िस्म के लोग अज़ाब के मुस्तहिक़ हैं, दूसरी क़िस्म के लोगों से पूछा जाएगा। तीसरी क़िस्म के लोगों को दरगुज़र कर दिया जाएगा, चौथी क़िस्म के लोग अज्र व सवाब से नवाज़े जायेंगे और पांचवीं क़िस्म के लोग अल्लहा के नज़दीकी बन्दों में से होंगे, क्योंकि वह उन लोगों में से हैं जिन्होंने नमाज़ के ज़रिया

अपनी आंखों को ठण्डक पहुंचाई, और जिसने दुनिया में नमाज़ के ज़रिया अपनी आंखों को ठण्डक पहुंचाई तो आखिरत में अल्लाह तआला के नज़दीक होने से उसकी आंखों को ठण्डक मिलेगी और दुनिया में भी उसकी आंखों को ठण्डक नसीब होगी, और जिसकी आंखें अल्लाह तआला की नज़दीकी से ठण्डक पा लें उसको देखने वाली हर आंख भी उसे देखकर ठण्डक महसूस करेगी, लेकिन जिस आदमी की आंखे अल्लाह तआला के नज़दीकी से ठण्डक न पा सकें उसका नफ्स दुनिया पर हसरत और अफ़सोस से टुकड़े-टुकड़े होने के लिए खड़ा होता है तो अल्लाह तआला फरमाता है किः मेरे और इस बन्दे के दरमियान से पर्दा उठा दो, लेकिन जब बन्दा इधर-उधर मुतवज्जह हो जाता है तो अल्लाह फरमाता है कि पर्दा गिरा दो।

इस हदीस की तफ़सीर यह की गई है कि बन्दा नमाज़ की हालत में जब अपना दिल अल्लाह से हटा कर दूसरी तरफ लगा देता है तो उसके और अल्लाह के बीच पर्दा पड़ जाता है, फिर शैतान उस आदमी के पास आकर दुनिया के मुआमलात पेश करता है और आईना की शक्ल में उसे दिखाता है।

लेकिन अगर बन्दा नमाज़ की हालत में अपने दिल के साथ अल्लाह की जानिब मुतवज्जा होता है और इधर-उधर नहीं सोचता तो शैतान उसके दिल और अल्लाह के दरमियान हायल नहीं हो पाता, शैतान को मौक़ा उस वक़्त मिलता है जब बन्दा और अल्लाह के दरमियान पर्दा हायल हो जाता है, बन्दा जब अपने दिल को हाज़िर करके अल्लाह की जानिब मुतवज्जा होता है तो शैतान भाग जाता है और जैसे ही बन्दा इधर-उधर मुतवज्जा होता है तो शैतान वापस आ जाता है, नमाज़ के अन्दर बन्दा की और शैतान की यही हालत होती है।

मेरे भाईयो! आप भी उपर दिये गये पांच किस्म के नमाज़ियों में से किसी न किसी क़िस्म में होंगे। अब खुद फैसला कर लें कि किस क़िस्म में होना आप पसन्द करेंगे।

नमाज़ से फारिग़ होने के बाद अपनी जगह पर बैठ कर बिल्कुल सुकून और इतमिनान के साथ अल्लाह के ज़िक्र में मसरूफ़ रहें। और रसूल मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसललम की इस हदीस पर भी ग़ौर करें कि एक बार एक क़ब्र के पास से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र हुआ तो फरमायाः यह किस की क़ब्र है? लोगों ने कहाः फलां की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया इस आदमी के नज़दीक दो रकअत नमाज़ तुम्हारी बक़िया दुनिया से ज़्यादा बेहतर है।

ग़ौर करें कि उस मैयत के लिए दो रकअत नमाज़ बाक़ी दुनिया से ज़्यादा अज़ीज़ थी, तो फिर हमें क्या हो गया है कि हम नमाज़ को कोई अहमियत नहीं देते? इस फानी दुनिया को हासिल करने के लिए दुनिया वालों के साथ हम भी दौड़े चले जा रहे हैं? और खाने-पीने में हलाल व हराम की कोई तमीज़ नहीं करते?

मेरे भाईयो! आप उस हदीस को पढ़ें जिस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि क़ियामत के दिन सात क़िस्म के लोगों को अल्लाह तआला अपने अर्श के साया तले जगह देगा जबकि उसके साया के अलावा और कोई साया न होगा, उनमें वह आदमी भी होगा जिसका दिल मस्जिदों में लगा रहता है। (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)

उस आदमी को इसलिए यह बदला दिया जाएगा क्योंकि वह अल्लाह से मुलाकात की आरजू रखता है कि अल्लाह के घर में अल्लाह के साथ रहे, उसकी किताब पढ़े और उसके जिक्र से अपनी जुबान तर रखे। इसलिए नमाज़ से फारिग होकर आप भी अपनी जगह बैठे रहें, और बिल्कुल सुकून व इतमिनान के साथ अल्लाह का ज़िक्र करें, और यह यकीन रखें कि इस नमाज़ का अज्र लिखा जा चुका है। लेकिन आप नहीं जानते कि आप की नमाज़ कुबूल हुई है या नहीं।

इसकी मिसाल यूं समझें कि आप अपने महकमा (विभाग) के सदर के पास जब कोई काम लेकर आते हैं तो उस काम के पीछे उसको बनाने संवारने में आप अपनी पूरी सलाहियत खर्च कर देते हैं ताकि आप का सदर खुश हो जाए और आप के काम को कुबूल कर ले, ज़रा सोचें अगर आप का यह काम रद्द कर दिया जाये और आप के मुंह पर मार दिया जाये तो उस वक़्त आप की क्या हालत होगी? यही मुआमला नमाज़ और दूसरी इबादात का भी है, इबादात मुसलसल अपना मुहासिबा करने का तक़ाज़ा करती हैं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है बन्दा जब अच्छी तरह वजू करने के बाद नमाज़ के लिए खड़ा होता है और नमाज़ के अन्दर किराअत और रूकूअ व सुजूद को मुकम्मल तौर पर अदा करता है तो नमाज़ उससे कहती है कि अल्लाह तुम्हारी भी इसी तरह हिफाज़त फरमाए जिस तरह तुम ने मेरी हिफाज़त की है। उसके बाद नमाज़ आसमान की तरफ रोशनी और नूर के साथ जाती है उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं यहां तक कि वह अल्लाह तबारक व तआला के पास पहुंचती है और अपने नमाज़ी के लिए शिफाअत (सिफारिश) करती है।

लेकिन अगर बन्दा वजू और नमाज़ के अन्दर क़िराअत और रूकूअ व सुजूद को बर्बाद कर देता है, यानी कामिल तौर पर अदा नहीं करता तो नमाज़ उससे कहती है कि अल्लाह तुम को भी इसी तरह ज़ाये कर दे जिस तरह तुम ने मुझे ज़ाये (बर्बाद) किया है। फिर वह नमाज़ आसमान की तरफ ले जायी जाती है तो आसमान के दरवाज़े उसके लिए बन्द हो जाते हैं, फिर पुराने बोसीदा कपड़े की तरह लपेट कर लटका दी जाती है और फिर नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा की निगरानी में सैलाब प्रभावितों में रिलीफ की तक़सीम

महाराष्ट्रा के दो जिले सांगली और कोलहा पुर सैलाब से अत्यंत प्रभावित हुए हैं। अलहम्दुलिल्लाह प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्र की निगरानी में सैलाब प्रभावितों में रिलीफ फण्ड और खाने के सामान तक़सीम किए गये।

जमीअत अहले हदीस पूना की तरफ से चार टन अनाज, कपड़ा, बुर्का, तीन सौ स्कूल बैग व टिफिन बैग वगैरह और एक बड़ी रक़म नक़द तकसीम की गई। इसी तरह जिलई जमीअत अहले हदीस शोलापुर की जानिब से भी एक बड़ी रक़म नक़द तक़सीम की गई। प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा सैलाब प्रभावितों के हक़ में दुआ करती है कि अल्लाह हर मुसीबत से हिफाज़त फरमाए। (सरफराज़ अहमद अंसारी, सचिव प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा)

(जरीदा तर्जुमान १६-३० सितम्बर २०१६)

क़र्ज़दार को मोहलत देने का सवाब

सईदुर्रहमान सनाबिली

इस्लाम ने जिस तहर कर्ज़ देने की प्रेरणा दी है उसी तरह से परेशान हाल के बारे में निर्देश दिया है कि उससे अपने हक़ को मांगने में नर्मी और आसानी का मामला किया जाए और तय शुदा वक़्त पर वह कर्ज़ न लौटा सके तो कर्ज़ देने वाले को चाहिए कि इसकी मुददत बढ़ा दे और अपना हक़ मांगने में सख्ती न दिखाए क्योंकि कर्ज़दार को मोहलत देने से बहुत सवाब मिलता है।

अगर आप ने किसी को कर्ज़ दे रखा है लेकिन वह तय समय पर आप के कर्ज़ को वापस नहीं कर पा रहा है और तंग दस्ती का शिकार है अर्थात कर्ज़ वक़्त पर वापस नहीं कर पा रहा है तो आप के उसको मोहलत देने की वजह से क़र्ज़ के बराबर माल सदक़ा करने का हर रोज़ सवाब मिलता रहेगा। बुरैदा बिन हसीब रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना जिसने किसी परेशान हाल को मोहलत दी उसके लिये हर रोज़ उसके बराबर सदक़ा का सवाब है। उन्होंने बयान किया कि फिर मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना जिस किसी ने किसी तंगदस्त को मोहलत दी, उसके लिए हर रोज़ इसके बराबर सदक़ा का सवाब है। फिर मैंने आप को फरमाते हुए सुना जिस किसी ने किसी तंग दस्त को मोहलत दी उसके लिये हर रोज़ इससे दो गुना सदक़ा का सवाब मिलता है इस पर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया उसके लिये कर्ज़ की वापसी के वक़्त से पहले हर रोज़ इसके बराबर सदके का सवाब है और जब वह इसको क़र्ज़ की वापसी के तय शुदा वक़्त के बाद मोहलत दे तो उसके लिये इसके दो गुना सदक़ा करने के बराबर सवाब है। (मुसनद अहमद ३६०/५ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है। सहीहुत तरगीबत वत तरहीब १/५४१)

आपने हक़ के मुतालबे के वक़्त नर्मी का उपदेश दिया है अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स अपने हक़ का मुतालबा करे वह नाजायज़ तरीक़े से बचते हुए करे हक़ मुकम्मल हासिल हो या न हो (सुनन इब्ने माजा २४४६ शैख अलबानी ने इसे सहीह क़रार दिया है, देखिए सहीहुत तरगीब वत तरहीब २/३२६)

तक़ाज़ा करने में आसानी अच्छे मुसलमान की खूबी है। अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मोमिनों में से सबसे बेहतर वह है जो बेचने में सुहूलत दे, अदा करने में सुहूलत दे, अपना हक़ तलब करने में सुहूलत (आसानी) दे। (अत-तरगीब वत तरहीब ४६५३)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दूसरे के साथ आासनी करो, तुम्हारे साथ आसानी की जाएगी (मुसनद अहमद २२३३, शैख अलबानी ने इसे सहीह क़रार दिया है, सहीहुत तरग़ीब वत-तरहीब २/३२७)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह बजली रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम से पहले लोगों में से एक शख्स को अल्लाह ने मआफ कर दिया, वह बेचते वक़्त सुहूलत देता था, खरीदते वक़्त सुहूलत देता था और तक़ाज़ा करते वक़्त आसानी करता था (सुनन तिर्मिज़ी १३३५, शैख अलबानी ने इसे सहीह क़रार दिया है)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला उस बन्दे पर दया करे जो बेचने, खरीदने और मुतालबा करते वक़्त सुहूलत दे। (सहीह बुखारी २०७६)

तंग दस्त और परेशान हाल को मोहलत देने से दुआएं कुबूल और मुसीबत से छुटकारा मिलता है। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स चाहता है कि उसकी दुआ कुबूल की जाए और मुसीबत दूर की जाए वह तंगदस्त पर आसानी करे (मुसनद अहमद-४४३०)

परलय के दिन की मुसीबतों से छुटकारा मिल जाता है। अबू क़तादा लैसी और जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इस बात को पसन्द करे कि उसको क़्यामत की मुसीबत से निजात दी जाए और उसको अल्लाह के अर्श के नीचे साया (क्षांव) दिया जाए तो वह तंगी वाले को मोहलत दे (मजमऊज़्ज़वाइद, हैसमी, ४/१३४, इमाम हैसमी ने इस हदीस की सनद को हसन क़रार दिया है)

तंगदस्तों को मोहलत देने से जन्नत में जाने का कारण बन जाता है। रबई बिन ख़िराश बयान करते हैं कि हुज़ैफ़ा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो और अबू मसऊद रज़िअल्लाहो तआला अन्हो एकटठा हुए तो हुजैफ़ा रज़िअल्लाहो तआलाअ अन्हो ने बयान कियाः एक शख्स की अपने रब से मुलाक़ात हुई तो अल्लाह तआला ने पूछाः तूने क्या अमल किया? उसने अर्ज़ कियाः मैंने तो नेकी नहीं की, सिवाए इसके कि मैं मालदार था और जब लोगों से अपने हक़ की वापसी का तक़ाज़ा किया करता था तो खुश्हाल (समृद्ध) से कुबूल किया करता था और तंगदस्त से दरगुज़र (मआफ) किया करता था। इस पर अल्लाह तआला ने फरमायाः मेरे बन्दों से दरगुज़र करो'' अबू मसऊद रज़िअल्लाहो तआला अन्हो कहते हैं कि मैंने पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसे ही फरमाते हुए सुना। (सहीह मुस्लिम-११९५)

इस्लाम ने जिस तरह कर्ज देने पर उभारा और प्रेरणा दी है और कर्ज़ लेने वाले के साथ अच्छा व्यवहार करने पर भी ज़ोर दिया है उसी तरह कर्ज़ को अदा करने पर भी ज़ोर दिया है। क़ुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''अल्लाह तआला

तुम्हें हुक्म देते हैं कि अमानतें उनके हक़दारों को अदा करो'' (सूरे निसा-५८)

कुरआन की इस आयत से स्पष्ट होता है कि हर कर्ज़दार को चाहिए कि वह क़र्ज़ को अदा करे। यह भी हक़ीक़त है कि अगर कोई शख्स कर्ज़ की अदायगी की निय्यत रखता है तो ऐसी सूरत में अल्लाह तआला उसके क़र्ज़ को अदा करवा देता है। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमयाः जो शख्स लोगों के माल अदा करने की निय्यत से लेता है तो अल्लाह तआला उससे अदा करवा देते हैं। (बुखारी २३८७)

जो लोग कर्ज़ को अच्छे ढंग से अदा करते हैं उन्हें अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बेहतरीन इंसान क़रार दिया फरमाया ''लोगों में सबसे बेहतर वह है जो कर्ज़ की अदायगी में सबसे अच्छे होते हैं'' (सहीह मुस्लिम १६००) क़र्ज वापस न करने की सूरत में कर्ज़दार की पेशी चोर की हैसियत से होगी। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस शख्स ने इस एरादे से कर्ज़ मांगा कि हक़दार को उसका हक़ वापस नहीं करेगा फिर धोके से उसका माल ले लिया और कर्ज़ दिए बिना मर गया तो वह अल्लाह से चोर की हैसियत से मिलेगा। (सहीहुत तरगीब वत तरहीब २३५/२)

कर्ज़ वापस न देने वाला अपनी नेकियों से वंचित कर दिया जाएगा और क़र्ज़ देने वाले इन्सान को उसकी नेकियों से क़र्ज़ की भरपाई की जाए गी। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस शख्स का इन्तेक़ाल (निधन) हुआ और उसके ज़िम्मे दीनार या दिरहम (रूपया पैसा) हो तो उसकी नेकियों से बदला दिया जाएगा वहां (परलोक) में न कोई दीनार होगा न दिरहम (सुनन इब्ने माजा २४३६ शैख अलबानी ने इसे सहीह क़रार दिया है।

कर्ज़ देते वक़्त दी हुई रक़म या चीज़ से ज़्यादा की वापसी की शर्त लगाना हराम है और यही बढ़ा कर लेना सूद (व्याज) है। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते थे जो शख्स कोई कर्ज़ दे तो वह इससे बेहतर वापस लेने की शर्त न लगाए अगर्चे वह बढ़ोतरी मुटठी भर चारा हो यही तो सूद है। (मुवत्ता इमाम मालिक ६८२)

यहां यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि अगर कोई कर्ज़दार अपनी खुशी से बगैर पहले से शर्त के क़र्ज़ से बेहतर चीज़ देता है तो इस को लेने में कोई पाप नहीं है। अबू हुरैरह रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक शख्स का अल्लाह के रसूल मुहममद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिम्मे एक ख़ास आयु का ऊंट था। वह शख्स आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तक़ाज़ा करने आया तो आपने फरमाया कि इस को दे दो। सहबा किराम ने इस उम्र (आयु) का ऊंट ढूंढ़ा लेकिन इससे बेहतर ऊंट मिला तो अल्लाह के रसूल ने इसे ही देने का हुक्म दिया यह देख कर कर्ज़ देने वाला बोल पड़ा कि आप ने मेरा हक़ पूरी तरह दे दिया अल्लाह इसका आप को बेहतर बदला दे। इस पर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से बेहतरीन लोग वह हैं जो क़र्ज़ अदा करने में सबसे बेहतर हों। (सहीह बुखारी २३९३)

(प्रेस रिलीज़)

आसाम सैलाब प्रभावितों में तीसरे दिन भी राहत व रिलीफ का काम जारी

दिल्ली ६ अक्टूबर २०१६

प्राकृतिक आपदा कभी कभार बन्दों की आजमाइश और कभी गुनाहों के कारण आती है। इस आजमाइश और मुसीबत की घड़ी में सब्र व संयम और तौबा जहां मुसीबत और आज़माइश में लिप्त लोगों के लिये ज़रूरी है वहीं अल्लाह के साधारण बन्दों के लिये जो इससे सुरक्षित हैं उन की भी आज़माइश यह है कि वह ऐसे वक़्त में इस सुख और सुरक्षा पर अल्लाह का शुक्र अदा करें और अपने दुख ग्रस्त भाइयों की हर तरह से मदद करें। इन ख़्यालात का इज़हार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने उच्च स्तरीय राहती प्रतिनिधिमण्डल के आसाम दौरे से वापसी पर किया।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की प्रेस रिलीज़ के अनुसार इसका एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल जो कई दिनों से निरन्तर आसाम के सैलाब प्रभावितों में रिलीफ और नुकसानात का जायज़ा लेने का काम कर रहा था कल भी जिला गुवाल पाड़ा की विभिन्न जगहों का दौरा किया और दौरा के बाद आज दिल्ली केन्द्र की तरफ वापस आ चुका है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के इस उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल ने जमाअत के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की अगुवाई और निगरानी में सैलाब की परिस्थिति का जायज़ा लिया। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अन्य जिम्मेदारान महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली, कोषाध्यक्ष अल हाज वकील परवेज, जिलई जमीअत और प्रादेशिक जमीअत आसाम के जिम्मेदारान विशेष तौर पर प्रादेशिक अमीर मौलाना मकसूदुर्रहमान मदनी की मौजूगी में सैलाब प्रभावितों में नक़दी, खाने पीने के सामान, कपड़े और अन्य घरेलू आवश्यक सामान बांटे गये। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के इस उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल ने गांधवा बागपूरी, मांगोरमारी, दोईगांव, होलीहामारी, चंगागोड़ी, खलोबिया, बांदी दारंग, बाली डोंगा, मोरीगांव, टिमका बोरी, लखीपुर गुवालपाड़ा जैसे स्थानों पर राहत का काम बड़े पैमाने पर किया। इसके अलावा प्रतिनिधिमण्डल ने मदरसा दारूल हदीस टिमका बोरी, मदरसा उम्मे सलमा लिलबनात बोरी, मदरसा रियाजुल जन्ना गोलपाड़ा, मदरसा खदीजतुल कुबरा लिल बनात टिलू पाड़ा लखीपूरा में भी क्षात्रों में कपड़े और कम्बल तक़सीम किए गए। इसके अलावा नियमित तौर पर सैलाब प्रभावितों के पुनर्वास (बाज़ आबादकारी) का काम मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की योजना में शामिल है।

जारी कर्ता
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

प्रेस रिलीज़

नई नस्ल की शिक्षा एवं प्रशिक्षण, राष्ट्रीय एकता की स्थापना, अम्न व इंसानियत के विकास और आतंकवाद के खातमे के लिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा १२वां आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स ५ अक्टूबर से दिल्ली में

दिल्ली १८ सितंबर २०१९

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी देश व्यापी स्तर पर इमामों, प्रचारकों और अध्यापकों की ट्रेनिंग के लिये ५ से १३ अक्टूबर २०१९ तक अहले हदीस कम्पलैक्स में १२वां आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स का आयोजन हो रहा है जिस में देश भर से प्रादेशिक अहले हदीस जमीअतों के नामित इमाम, प्रचारक और अध्यापक गण भाग ले रहे हैं। यह जानकारी मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने मीडिया के नाम जारी एक बयान में दी।

सम्माननीय अमीर (अध्यक्ष) ने ट्रेनिंग के महत्व, ज़रूरत और सार्थकता को स्पष्ट करते हुए कहा कि मानव जीवन में शिक्षा प्रशिक्षण की बड़ी अहमियत है। इससे सलाहियतों में निखार आता है, सक्रियता में बढ़ोतरी होती है, संगठित तरीक़े से जिन्दगी गुज़ारने, संसाधनों को अच्छे ढंग से स्तेमाल करने की जिम्मेदारी के एहसास के साथ कौम व मिल्लत और मानवता की सेवा करने का गुण आता है। आध्यात्मिक उत्थान के साथ साथ ज्ञान की नई राहें खुलती हैं और माहिरीन के अनुभव से फायदा उठाने का सुनेहरा मौक़ा मिलता है। यही वजह है कि दुनिया की हर सभ्य एवं विकसित कौमों में ट्रेनिंग का एहतमाम किया जाता है लेकिन अफसोस की बात यह है कि हमारे दीनी हलक़ों में इसकी ज़रूरत ज़्यादा होने के बावजूद इसकी तरफ कम ध्यान दिया जाता है।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि नई नस्ल की शिक्षा, प्रशिक्षण, देश व समुदाय के निर्माण, मानवता की सफलता, एकता और सदभावना की स्थापना, सांप्रदायिक सौहार्द, धार्मिक एवं मसलकी उदारता को बढ़ावा देने, संविधान और कानून की पासदारी एवं पालन, अम्न व शान्ति की स्थिरता और आतंकवाद के ख़ातमे में इमामों, प्रचारकों और अध्यपकों की भूमिका एक अकाटय सच्चाई है और ट्रेनिंग के ज़रिए इन सलाहियतों और प्रयासों को विकसित करना वक़्त की सबसे बड़ी ज़रूरत है इसी लिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने ओलमा, प्रचारकों, और अध्यापकों की ट्रेनिंग को प्राथमिकता में शामिल करके १७ साल पहले ट्रेनिंग का यह शुभ सिलसिला शुरू किया था जो कि आज भी जारी है। अल्लाह की कृपा

से इस प्रोग्राम के असाधारण प्रभाव पड़े हैं जिस का एतराफ सबने किया है।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि इस रेफ्रेशर कोर्स में विभिन्न दीनी, शैक्षणिक, प्रशिक्षणिक और समाज सुधार के विषयों के अलावा राष्ट्रीय सदभावना और सांप्रदायिक सौहार्द की स्थापना की अहमियत, ज़रूरत, कार्य शैली, आतंकवाद के ख़ातमे में मस्जिदों के इमामों और अध्यापकों की भूमिका, प्रदूषण से संरक्षण, और वृक्षारोपण की अहमियत व ज़रूरत, भाईचारा, उदारता की स्थापना में इमामों और अध्यापकों की भूमिका, पानी का संरक्षण वक़्त की सबसे बड़ी ज़रूरत है, अम्न व शान्ति की स्थापना में इमामों और अध्यापकों की भूमिका, मानवता के संरक्षण में धर्मों का रोल जैसे महत्वपूर्ण शीर्षक पर विशेष तौरपर दीनी और आधुनिक ज्ञान के माहिरीन के लेक्चर्स (व्याख्यान) होंगे।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि इस रेफ्रेशर कोर्स में देश के सभी राज्यों को प्रतिनिधित्व दिया गया है और प्रादेशिक जमीअतों से अनुरोध किया गया है कि वह अपने राज्य से इस दावती और तर्बियती प्रोग्राम में शिर्कत के लिये ऐसे प्रतिनिधियों को नामित करें जो दीनी, तालीमी और कल्याणकारी कामों का जजबा रखते हों और जो जमाअत व जमीअत और देश व मानवता के निमार्ण, विकास और सफलता में सहायक हों सकें। (जरीदा तर्जुमान १-१५ अक्टूबर २०१९)

अहले हदीस रिलीफ फण्ड

सैलाब से प्रभावितों के लिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की हमदर्दाना अपील

बिहार, बंगाल, आसाम और देश के विभिन्न हिस्सों में सैलाब की वजह से लाखों लोग अपना घर बार छोड़ कर अस्थायी कैम्पों में शरण लिये हुये हैं जिनकी मदद करना हमारा धार्मिक, मिल्ली और मानवीय कर्तव्य है। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपनी प्राचीन इतिहासिक परम्परा के अनुसार बेघर और उजड़े हुये लोगों के लिये रिलीफ और राहत का काम कर रही है। तमाम असहाबे ख़ैर और समृद्ध हज़रात से अपील है कि यथाशक्ति सैलाब प्रभावितों और अत्यंत मुसीबत में फंसे लोगों की सहायता में हिस्सा लेकर अल्लाह की तरफ से पुण्य के पात्र बनें। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपनी तमाम उप शाखाओं से अपील करती है कि विशेष ध्यान दें।नोटः- चेक और ड्राफ्ट निम्नलिखित नाम से बनवायें और भेजी हुयी रक़म की मद को स्पष्ट करें। अल्लाह आपको बेहतरीन बदला दे।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICIC Bank) Chandni Chowk, Delhi-110006

(RTGS/NEFT/IFSC CODE -ICIC0006292)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द 4116, बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करें

खुर्शीद आलम मदनी

इस्लामी नैतिकता आप को यह शिक्षा देती है कि लोगों के साथ अच्छे चरित्र व आचरण से पेश आएं ताकि आप पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वलसल्लम की मज्लिस के करीब हो जाएं।

आप के अच्छे व्यवहार के सबसे ज़्यादा पात्र (मुस्तहिक़) आप के मां बाप हैं, उनका सम्मान करें, उनके साथ अच्छा व्यवहार करें, उनकी फरमांबरदारी करें, जब उनसे बात चीत करें तो नर्म अन्दाज़ से करें, उनको उफ़ तक न कहें, उन पर दानवीरता और सख़ावत करें। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः और तेरा परवरदिगार साफ साफ हुक्म दे चुका है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करना और मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करना। अगर तेरी मौजूदगी में उनमें से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उनके आगे उफ तक न कहना, न उन्हें डांट डपट करना बल्कि उनके साथ शिष्टाचार और सम्मान से बात करना। (सूरे इसरा-२३) इनके अलावा रिशतेदारों के साथ जो रिश्ता नाता जोड़ेगा अल्लाह तआला उसे अपने से जोड़ेगा और उसकी रोज़ी को बढ़ा देगा, उसकी उमर लंबी कर देगा औरऐसा शख्स भलाई, बर्कत और अल्लाह तआला की तरफ से अज्र का पात्र होगा। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स यह चाहता है कि उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी कर दी जाए, उसकी आयु लंबी कर दी जाए तो वह रिश्ते नाते को जोड़े रखे। (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

इसी तरह ओलमा जो नबियों के वारिस हैं उनका इस्लाम में बड़ा स्थान है, उनका मान सम्मान करें। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ‘‘जो शख्स बड़ों का सम्मान और छोटों पर दया नहीं करता और अपने आलिम के हक़ को नहीं पहचानता वह मेरी उम्मत में से नहीं है। (मुसनद अहमद, तबरानी) जो लोग अध्यापकों का सम्मान नहीं करते हैं उनके बारे में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तीन क़िस्म के लोग ऐसे हैं जिनका असम्मान करने वाले मुनाफ़िक़ हैं बूढ़ा, ज्ञानी और इन्साफ करने वाला इमाम (तबरानी)

आपके सबसे अच्छे दोस्त वह हैं जो आप की कामयाबी और निजात की राह पर लगा दें और अल्लाह की तरफ बुलाएँ इसलिये ऐसे दोस्तों से दूर रहा जाए जो हिलाकत व बर्बादी का सबब बनते हैं, नमाज़ और दूसरी इबादतों से गाफिल कर देते हैं, ऐसे लोगों को आप अपना दोस्त हर्गिज़ न समझें जो आप को फिल्म देखने और ज्ञानात्मक सभाओं से दूर करके फसाद बिगाड़ और मादक पदार्थों में व्यस्त करने का प्रयास करते हैं।

लेकिन जो आप के अच्छे दोस्त हैं उनके साथ अच्छा व्यवहार करें उनकी मदद करें और उन की बुराई करने से परहेज़ करें, अच्छे आचरण और व्यवहार से ईमान मुकम्मल होता है और आप के कर्म का तराजू वज़नी होता है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुसलमान अपने अच्छे आचरण व्यवहार से रात में इबादत करने वाले रोज़ा रखने वाले के बराबर स्थान प्राप्त कर लेता है। (अबू दाऊद)

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश

नवास बिन समआन रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नेकी अच्छी आदत है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और लोगों को इस गुनाह की खबर होना तुम्हें नापसन्द हो। (मुस्लिम २५५३)

नवास बिन समआन रजिअल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्क़िल बिन यसार रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २९४८)

अबू बकरा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुक़ाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

जबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में कोई मरे तो अल्लाह के बारे में उसका गुमान अच्छा हो। (मुस्लिम २८७७)

जबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक शैतान इस बात से मायूस हो चुका है कि जजीरए अरब के मुसलमान उसकी इबादत करें और लेकिन उनके बीच में झगड़ा और फितना पैदा करने में लगा हुआ है। (मुस्लिम २८१२)

जबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सिफारिश करो इस पर तुम को सवाब मिलेगा और अल्लाह तआला अपने नबी की जुबान के जरिये जो चाहेगा पूरा करेगा। (बुखारी १४२२ मुस्लिम२६२७)

इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी बीमार की इयादत के लिये जाते तो बीमार से कहते कि फिक्र की बात नहीं है इन्शाअल्लाह यह मर्ज गुनाहों से पाक करने वाला है। (बुखारी ५६५६)

इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने औरत की मुशाबहत करने वाले मर्दों पर लानत की और मर्दों की मुशाबहत करने वाली औरतों पर लानत की। (बुखारी ५८८६)

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि एक आदमी ने नबी

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सवाल किया कौन सा इस्लाम बेहतर है? फरमायाः खाना खिलाओ और सलाम करो जिनको तुम जानते हो और जिनको नहीं जानते हो। (बुखारी १२ मुस्लिम ३९)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो आदमियों ने छींका तो उन दोनों में से एक ने अलहम्दुल्लिाह कहा और दूसरे ने नहीं कहा तो एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल आप ने इसका जवाब दिया और आप ने मेरा जवाब नहीं दिया तो आपने फरमाया तुम ने अलहम्दुल्लिाह कहा और इसने अलहम्दुल्लिाह नहीं कहा (बुखारी २९९१ मुस्लिम ६२३५)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जहन्नम बराबर कहेगी ''और चाहिये'' लेकिन जब अल्लाह अपने पैर को उसमें रख देगा तो कहेगी बस बस तुम्हारी इज्जत की कसम एक हिस्सा दूसरे हिस्से को खाये जा रहा है (बुखारी २८४८, मुस्लिम ६६६१)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारी तरह नमाज़ पढ़ी और हमारी ही तरह किबला की तरफ मुंह किया और हमारे जबीहा को खाया तो वह मुसलमान है जिसके लिये अल्लाह और उसके रसूल की पनाह है तो तुम अल्लाह और उसके रसूल की दी हुयी पनाह से ख्यानत न करो। (बुखारी ३९१)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम ऐसा अमल करते हो जो तुम्हारी नज़र में बाल से ज्यादा बारीक है तुम उसे मामूली समझते हो (बड़ा गुनाह नहीं समझते) और हम लोग नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम के जमाने में इन कामों को हलाक कर देने वाला समझते थे। (बुखारी ६४९२)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब अल्लाह किसी कौम पर अज़ाब उतारता है तो अज़ाब उन सब पर आता है जो उस कौम में होते हैं फिर उनके आमाल के अनुसार उठाया जायेगा। (बुखारी७१०८ मुस्लिम २८७९)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर रखी गयी है इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ काइम करना, जकात देना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना। (बुखारी १६, मुस्लिम ८)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान के लिये अमीर की बात सुनना और उसकी एताअत करना जरूरी है उन चीज़ों में भी जिन्हें वह पसन्द करे और उनमें भी जिन्हें वह नापसन्द करे जब तक उसे मअ्सियत का हुक्म न दिया जाये कि जब उसे मअ्सियत (पाप) का हुक्म दिया जाये तो न सुनना बाकी रहेगा न एताअत करना। (बुखारी ७१४४, मुस्लिम १८३०)

(प्रेस विज्ञप्ति)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति के सत्र में आतंकवाद और दाइश की निन्दा

देश, समुदाय से संबन्धित महत्वपूर्ण फैसले, 35वीं कांफ्रेन्स मार्च 2020 में

दिल्ली १३ अक्टूबर २०१६

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की प्रेस रिलीज के अनुसार आज अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति की एक अहम मीटिंग मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की अध यक्षता में आयोजित हुई जिस में देश के अधिकतर राज्यों से आये सदस्यों और प्रादेशिक पदधारियों ने शिर्कत की। सम्माननीय अमीर ने अपने संबोध ान में दावत, शिक्षा, प्रशिक्षण, संयम तक़्वा, एकता, राष्ट्रीय सदभावना और सांप्रदायिक सौहार्द, मानवता की सेवा और इस्लाम की शिक्षाओं को देशबन्ध ाुओं तक पहुंचाने की ज़रूरत पर जोर दिया और आतंकवाद और दाइश और इस जैसे आतंकी संगठनों की सख्त शब्दों में निन्दा की। इस सत्र में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने जमीअत की कारकर्दगी रिपोर्ट पेश की जिसकी उपस्थितगण ने पुष्टि की। कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज़ ने हिसाबात पेश किए जिस पर हाउस ने सन्तुष्टि और खुशी का इज़हार किया। मीटिंग में जमीअत के कामों का जायज़ा लिया गया और भविष्य में दावती तालीमी, संगठनात्मक, निमार्ण कार्य और कल्याणकारी प्रोजेक्टों और मानवीय सेवाओं को रफतार देने पर गौर किया गया। इसके अलावा जमीअत के माली स्थिरता ख़ास तौर से अहले हदीस मंज़िल के निमार्ण कार्यों को पूरा करने और अहले हदीस कम्पलैक्स में निर्माणाधीन बहुउददेशीय बिलडिंग के लिये चन्दा और देश व्यापी स्तर पर अहले खैर हज़रात से ज़्यादा से ज़्यादा सहयोग करने की अपील की गई। मीटिंग में एक अहम फैसला यह भी किया गया कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा ३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स मार्च २०२० में आयोजित हो गी जिसके कनवीनर मर्कज़ी जमीअत के कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज होंगे। इस मीटिंग में देश, समुदाय और विश्व समस्याओं से संबन्धित महत्वपूर्ण करारदाद और प्रस्ताव मंजूर किए गये।

कार्य समिति की क़रारदाद में कहा गया है कि मुसलमानों की मुश्किलात का बुनियादी सबब दीन से दूरी है अतः मुसलमानों को चाहिए कि वह कुरआन और हदीस की तरफ रूजू करें और पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तरीके और सहाबा किराम की जीवनी और आचरण की रोशनी में अपनी इस्लाह करें और दूसरों को भी इन्सानियत का भूला हुआ सबक याद दिलाएं। क़रारदाद में अन्तरधर्मीय वार्ता की ज़रूरत पर जोर दिया गया क्योंकि दुनिया की अधिकतर आबादी इसलाम की शिक्षाओं से नावाकिफ, अनभिज्ञ और विभिन्न प्रकार के भ्रमों की शिकार है। सत्र में देशीय और विश्व परिदृष्य में मसलकी एकता और आपसी सम्मान की ज़रूरत पर ज़ोर देते हुए अपील की गई कि हर मसलक के

लोग एक दूसरे के ख़िलाफ राय व्यक्त करने और सोशल मीडिया पर नकारात्मक टिप्पणी से बचें। कुछ असमाजिक तत्व अपने स्वार्थ या क़ौम के अन्दर विखराव पैदा करने के मकसद से सलफियत को निशाना बनाते रहते हैं जो कि एक अनुचित व घृणित और समुदाय के लिये हानिकारक कर्म है। क़रारदाद में प्रचारकों इमामें और अध्यापकों के १२वे आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स को लाभकारी और प्रशंसनीय मानते हुए इस पर मुबारकबाद पेश की गई है। बाबरी मस्जिद से संबन्धित अदालत में रोज़ाना सुनवाई का स्वागत किया और इसे सन्तुष्टिजनक क़रार दिया और अपने इस मोकिफ को दोहराया कि सम्माननीय अदालत इसे सिलसिले में जो भी फैसला करेगी वह इन्हें स्वीकार्य होगा। देश की विभिन्न जेलों में बन्द नौजवानों के मुक़दमात को जल्द से जल्द निमटाने की अपील की गई और अदालत से बाइज्ज़त बरी हुए नौजवानों को उचित मुआवज़ा दिए जाने की मांग की गई। देश और विदेश में होने वाले आतंकी वाक़आत और दाइश जैसे आतंकी संगठनों की सख्त निन्दा की गई। देश में एन. आर. सी. को लागू करने को न्याय पर आधारित क़रार देते हुए इसकी आड़ में खास वर्ग को मानसिक उत्पीड़न में लिप्त रखने की नकारात्मक कोशिश की निन्दा की गई और जिन लोगों के नाम शामिल होने से रह गये हैं इन्सानी हमदर्दी की बुनियाद पर उनका मसला हल करने की अपील की गई।सोशल मीडिया, प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक मीडिया को बाज कम्यूनिटीज़ के खिलाफ प्रोपैगण्डा और उन्हें बदनाम करने के लिये स्तेमाल किये जाने की निन्दा की गई। भाई चारा का माहौल बनाने और देश के नागरिकों में सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया। देश के विभिन्न हिस्सों में होने वाले मोब लिंचिंग के वाक़आत की निन्दा करते हुए तमाम धार्मिक गुरूओं से अपील की गई कि वह मोबलिंचिंग को रोकने के लिये अपना कर्तव्य निभाएं और सरकारें असमाजिक तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें। विभिन्न राज्यों में सैलाब से होने वाले जानी व माली नुकसानात पर रंज व गम और प्रभावितों के साथ सौहार्द व्यक्त की गई और देशवासियों और सरकारों से अपील की गई कि सैलाब प्रभावितों की ज़्यादा से ज़्यादा मदद करें। दिन बदिन बेरोज़गाी, मंहगाई, रिश्वत खोरी पर चिंता व्यक्त की गई और इनके खात्मे के लिये सरकारों से ठोस इक़दामात करने की अपील की गई। क़रारदाद में कश्मीर से संबन्धित इस मोकिफ़ को स्पष्ट किया गया कि कश्मीर भारत का अटूट हिस्सा है और कश्मीरी हमारे हमवतन भाई हैं उनका दुख दर्द पूरे देश का दुख व ग़म होना चाहिए और दफा ३७० के खातमे को लेकर स्वार्थियों और मूर्खों को किसी तरह की अशान्ति फैलाने का मौक़ा नहीं दिया जाना चाहिए और न ही किसी तरह के प्रोपैगण्डे का शिकार होना चाहिए। उप महादीप (बर्रेसग़ीर) में बढ़ते हुए तनाव को चिन्ता की दृष्टि से देखा गया और संजीदा वार्ता के ज़रीए तमाम समस्याओं के समाधान की अपील की गई। सऊदी अरब के तेल पलांट पर हमले की सख्त शब्दें में निन्दा की गई और असल मुज्रिमीन के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की ज़रूरत पर जोर दिया गया। फलस्तीन में इस्राईल की ज़ालिमाना व आक्रामक कार्रवाइयों की निन्दा करते हुए विश्व समुदाय से इस समस्या के समाधान की अपील की गई। इसके अलावा देश, समुदाय की महत्वपूर्ण शख़्सियतों के निधन पर शोक व्यक्त किया गया।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

❑ ❑ ❑

पवित्र कुरआन की तिलावत का फायदा

अब्दुर्रज़्ज़ाक अब्दुल मोहसिन अल बदर **अनुवादः अब्दुल मन्नान शिकरावी**

इमाम बैहक़ी रहमातुल्लाह अलैहि ने किताबुल आदाब में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजिअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत किया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कोई भी शख्स अपने आप से कुरआन ही का सवाल करे क्योंकि वह अगर कुरआन से मुहब्बत करता है तो वह अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है। कुरआन से मुहब्बत उसकी तिलावत उसमें गौर व फिक्र मार्गदर्शन के सबसे बड़े दरवाज़ों में से है। अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन को अपने बन्दों के लिये मार्गदर्शन, रहमत, रोशनी, खुशखबरी और नसीहत करने वालों के लिये नसीहत बना कर नाज़िल किया है, इसे बर्कत वाला और पूरे संसार के लिये मार्गदर्शन का माध्यम बना दिया है जो सबसे सीधे रास्ते की तरह मार्गदर्शन करता है, इसमें निशानियांऔर चेतावनी है ताकि लोग तक़वा अपनाएं या अल्लाह उनके लिये इसके ज़रिए नसीहत का सामान पैदा फरमा दे, इसमें अल्लाह ने बीमारियों खास कर दिलों के रोग अर्थात शक व सन्देह को दूर करने का उपचार रखा है। हर वह मुसलमान जो अल्लाह के रसूल का सच्चा अनुयाई बनना चाहता है उसके लिये मुनासिब है कि वह कुरआन करीम की तिलावत, उकसी आयतों में गौर व फिक्र, उसके अर्थ को समझकर हासिल करे और उसकी तालीमात पर अमल करे। इमाम इब्नुल कैइम रह० फरमाते हैं कि गौर व फिकूर के साथ कुरआन की तिलावत से ज़्यादा दिल के लिये लाभदायक कोई चीज़ नहीं है।

आप कह दीजिए अगर तुम अलाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह को मआफ कर देगा और अल्लाह तआला बड़ा मआफ करने वाला और रहम करने वाला है।

मुहब्बत, शौक, अल्लाह से भय, आशा, विश्वास, खुशी आत्मसमर्पण, सब्र व शुकूर और इनके अलावा दिल को जिन्दगी और कमाल कुरआन की तिलावत से मिलता है। इसके अलावा तमाम ऐसे बुरे कर्म जिनसे दिल में फसादा व बिगड़ा पैदा होता है कुरआन की तिलावत इन बुराइयों से दूर रखती है। कुरआन की तिलावत (पढ़ना) और उसकी शिक्षाओं पर अमल करना अल्लाह और उसके पैगम्बर से मुहब्बत की पहचान है जैसा कि अल्लाह ने पवित्र कुरआन में फरमाया।

आप कह दीजिए अगर तुम अलाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह को मआफ कर देगा और अल्लाह तआला बड़ा मआफ करने वाला और रहम करने वाला है। (सूरे आले इमरान-३१)

जानवरों को भी दया का हक़ है

हाफ़िज़ मुहम्मद उमर

जिस तरह एक इन्सान दया व करूणा का पात्र है उसी तरह जानवर भी नर्मी और कृपा के हक़दार हैं। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया : दया करने वालों पर अल्लाह भी दया करता है जिसे नर्म स्वभाम दिया गया है उसे दुनिया और परलोक की भलाई का एक हिस्सा दिया गया है। (मुसनद अहमद, अबू दाऊद)

जानवरों पर दया एवं करूणा एक इन्सान के लिये जन्नत में जाने का सबब बन जाता है। हदीस की किताब सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में है कि एक आदमी कहीं जा रहा था प्यास लगी तो एक कुवें में उतर गया और पानी पी कर बाहर निकल आया, बाहर निकलने के बाद देखता है कि एक कुत्ता हांप रहा है और सख्त प्यास की वजह से मिटटी चाट रहा है उसने दिल में सोचा कि यह कुत्ता भी सख्त प्यास की वजह से इसी तरह बेताब और व्याकुल हो रहा है जिस तरह मैं था वह दोबारा कुवें में उतरा और अपने चमड़े के मोज़े को पानी से भरा और मुंह में पकड़ कर ऊपर चढ़ आया और कुत्ते को पानी पिला दिया। अल्लाह ने इस शख्स की नेकी को स्वीकार करते हुए इसको मआफ कर दिया। श्रोताओं में किसी ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल इन जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने पर सवाब मिलेगा? पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हर चारा खाने वाले जानवरों से अच्छा व्यवहार करने पर सवाब मिलेगा। इसके विपरीत बाज दफा जावरों के साथ बुरा व्यवहार करने की वजह से एक इन्सान जहन्नम में भी जा सकता है जैसा कि हदीस की किताब सहीह बुखारी में आता है कि एक औरत बिल्ली की वजह से जहन्नम में चली गई कि उसने उसे बांधे रखा न कुछ खाने को दिया और न आज़ाद छोड़ा ताकि वह खुद से कुछ खा लेती।

इस्लाम ने जानवरों के साथ केवल अच्छा व्यवहार ही नहीं बल्कि प्ररेणा देकर जानवरों पर दया करने के बारे में कानून भी बनाया अर्थात जानवरों को भूखा और उसको कमज़ोर रखना निषेध क़रार दिया। एक बार पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ऐसा ऊंट देखा जिसका पेट भूख की वजह से पीठ से लगा हुआ था इस पर आप ने फरमाया इन जानवरों के मामले में अल्लाह से डरो जो बोल नहीं सकते, उन पर सवारी करो जब वह इस काबिल हों और उन्हें छोड़ दो जब वह अच्छी हालत में हों (अबू दाऊद) इसी तरह से इस बात से भी मना किया कि कोई आदमी जानवर सवारी की पीठ पर बैठा हुआ किसी से बातें करने की गर्ज़ से इस जानवर को देर तक खड़ा किए रखे (हदीस की किताब मुस्नद अहमद, मुस्तदरक हाकिम)

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना के एक

अंसारी के बाग में एक ऊंट देखा, ऊंट रहमते आलम (संसार के लिये दया आगार) पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखते ही बिलबिलाने लगा आपने ऊंट के आँसू पोछे और पूछा कि इस ऊंट का मालिक कौन है? मालिक आया तो पैमम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम्हें इस जानवर के बारे में अल्लाह का डर नहीं है, इस ऊंट ने मुझसे तुम्हारी शिकायत की है कि तुम इस से तो खूब काम लेते हो लेकिन भर पेट खाना नहीं देते। (मुसनद अहमद)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने एक चिड़िया को भी खेल के तौर पर क़त्ल किया वह क़्यामत के दिन अल्लाह के सामने फरयाद करेगी कि ऐ अल्लाह उसने मुझ को किसी फायदे के लिये नहीं बल्कि खेल के तौर पर क़त्ल किया था (नेसई) पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस शख्स पर लानत भेजी जो किसी जानदार को निशाने बनाने के लिये स्तेमाल करता है।

अहले हदीस कम्पलैक्स और अहले हदीस मंज़िल के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यों के सिलसिले में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न राज्यों के दौरे पर। इन्शाअल्लाह

जमाअती मित्रों और कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों को मालूम है कि अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में दो भव्य तारीखी बिलडिंगों के निमार्ण का काम जारी है। इस सिलसिले में अल हम्दुलिल्लाह अहले हदीस कम्पलैक्स के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल की ढ़लाई का काम होने वाला है और उर्दू बाज़ार में अहले हदीस मंज़िल की तीसरी मंज़िल के निमार्ण का काम मुकम्मल हुआ चाहता है जो अल्लाह के फज़्ल व तौफीक़ के बाद जमाअत व जमीअत के मोहसिनीन की सखावत व दानवीरता की देन है। अधिकृत सहयोग के लिये जमाअत के अहबाब सूबाई जमीअतों से तनसीक़ के बाद मस्जिदों में बाजाबता और मुसलसल एलान फरमायें।

जल्द ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल आप की ख़िदमत में हाज़िर हो रहा है। इस महान और तारीखी खैर के काम में अपना भर पूर हिस्सा और रोल अदा करके पुण्य के पात्र बनें।

नोटः- इस सिलसिले में संबन्धित राज्यों के पदधारियों और ज़िम्मेदारान को सूचना कर दी गयी है।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c 629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)

(प्रेस रिलीज़)

सऊदी अरब के तेल पलांट पर हमला निन्दनीय

दिल्ली १७ सितंबर २०१६

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने अपने एक अख़बारी बयान में कहा कि आतंकवाद वर्तमान काल का सबसे बड़ा घातक और खतरनाक नासूर है, देश, धर्म और कौमें सब इसकी चपेट में हैं। मानवता और अल्लाह की सृष्टि का इससे भारी नुकसान है इसलिये हर इन्सान का कर्तव्य है कि वह आतंकवाद के ख़ात्मे के लिये जितना भी प्रयास करे कम है। दूसरी ख़तरनाक चीज़ जिस से मानवता का सब से ज़्यादा नुकसान होता है वह जंग व जिदाल है अतः हर इन्सान का फर्ज़ बनता है कि वह इसके खिलाफ आवाज़ उठाने और इसके टालने के लिये जो भी संसाधन एवं माध्यम हो सकते हों या इस लिसलिसे में हर शख्स अपने तौर जो कुछ भी भूमिका अदा कर सकता हो इसे व्यवहारिक तौर पर करें। दुनिया के प्रभावी देश, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं और शख्सियात को भी इसमें अपना सकारात्मक रोल अदा करना चाहिए और इन्सानियत और अल्लाह की सृष्टि को रोज़ रोज़ की इन मुसीबतों से मुक्ति दिलानी चाहिए।

सऊदी अरब एक क़ाबिले क़द्र (आदरणीय) और लाइक़े फख़्र इस्लामी स्टेट है जिस में आदर्श अम्न व अमान और शान्ति का बोल बाला है और इसी वजह से इन्सानियत और इस्लाम दुश्मन ताक़तों की आंखों का कांटा बन कर चुभता रहता है। इस वक़्त कुछ इस्लाम दुश्मन ताक़तें हौसियों को स्तेमाल कर रही हैं और क्षेत्र के अम्न व अमान को नष्ट किए हुए हैं। उन्होंने पहले यमन के अम्न व अमान को भंग किया और जब उनकी सरकूबी का प्रयास किया गया तो बाज पड़ोसी देशों के भौतिक एवं आर्थिक सहयोग से पूरे खित्ते के अम्न व अमान के लिये ख़तरा बन गए। वह कभी सऊदी अरब के शहरों को निशाना बनाते हैं तो कभी काबा को नुकसान पहुंचाने की अपनी पुरानी परंपरा पर अमल पैरा नज़र आते हैं तो वह कभी सऊदी अरब के तेल पलांट को निशाना बनाते हैं और कभी आम लोगों के जान व माल की हिफाज़त व बर्बादी के अपराध करते हैं। सऊदी अरब के तल पलांट पर ताज़ा हमला इसकी बढ़ती हुई असहनीय शरअंगेज़ी का खुला सुबूत है। इसकी संगीनी के पेशेनज़र पूरी दुनिया इसकी निन्दा कर रही है यह एक प्रकार का आतंकवाद है जिसकी जितनी भी निन्दा की जाए कम है। हौसियों ही नहीं उन्हें शह देने वालों को भी चाहिए कि वह अपनी इन घिनावनी हरकतों से बाज़ आ जाएं और खित्ते में अम्न व अमान की बहाली को सुनिश्चित बनाएं। यह मुसलमानों का ही नहीं पूरी मानवता के हित में है जिसको वरियता देना चाहिए। सऊदी शासक और अवाम इन तखरीबी व आतंकी हमलों से कभी भयभीत नहीं हो सकते बल्कि अपने जुरअत व हिम्मत से हालात का मुक़ाबला करेंगे और कामयाब होंगे। (जरीदा तर्जुमान १-१५ अक्टूबर २०१६)